International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.newresearchjournal.com/educational
Volume 1; Issue 2; March 2016; Page No. 53-55

महादेवी के काव्य में वियोग भावना

सुनीता रानी

हिंदी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

महादेवी के काव्य में जो वियोग निहित है उसके विविध स्तरों एवं आयामों का उद्घाटन करने का विनम्र प्रयास मैनें इस ग्रंथ में किया है। वियोग के विभिन्न रूपों का आकलन करते हुए महादेवी के गीतों में उसका साक्षात्कार कराना ही मेरा प्रधान लक्ष्य रहा है। नारी-प्रकृति की सुकुमारता, स्निग्धता, आत्मोन्मुखता उनकी कविता में सर्वत्र परिव्याप्त है। इन प्रवृत्तियों के वियोग-बोध को विविध सूक्ष्मतर झाँकियों के अध्ययन, अनुषीलन और प्रतिपादन निस्संग भाव से करने की चेश्टा मैंने की है। मैंने यथासंभव महादेवी की कविता का वियोग-विवेचन काव्यादर्ष, वस्तु एवं षिल्प को दृश्टि में रखते हुए सुव्यवस्थित रूप में करने का प्रयत्न किया है। आषा है कि महादेवी के काव्य के वियोगपरक विवेचन का हिंदी प्रेमी संसार अवष्य स्वागत करेगा।

वियोग मानव-मन की सहज वृत्ति है और इसकी अनुभूति सार्वजनीन है। जीवन के प्रमुख प्राण-तत्त्वों में से एक होने के कारण यह अनादि काल से देष-काल की सीमाओं से परे मनुश्य-हृदय को आकर्शित, प्रभावित एवं स्पंदित करता रहा है। उदात्त एक ऐसा वियोर्ग है जिसका प्रभाव प्रमाता पर अत्यन्त प्रबल और दुर्निवार होता है। उसमें निहित अपार सुन्दरता तथा शक्तिमत्ता से प्रमाता के मन में विस्मय, उत्फुल्लता, प्रेरणा आदि भावनाएं उदित होती है। उदात्त से वियोर्ग गरिमामय एवं अनंत ऐश्वर्यशाली होता है। इसीलिए उदात्त को वियोर्ग का विस्तार भी कहते है।[१] ब्रैडले के विचारानुसार शक्तिशाली वस्तुओं की सुन्दरता से पहले प्रमाता पराभूत होता अवश्य है, पर तत्पश्चात् उसकी चिति-स्फीत होती है। वह आहादित हो उठता है।[२] हीगेल ने उदात्त को प्रतीकात्मक कला-विभाग के अन्तगर्त मानते हुए उसे वियोर्ग का दैवारिक कहा है। वह वस्तु-विशेष में असीम की अपूर्ण अभिव्यक्ति है।[३] काण्ट ने उदात्त के दो प्रमुख भेद माने है-गणितमूलक उदात्त और गतिमूलक उदात्त है।[४] एडमण्ड बर्क ने भाव की उत्पत्ति का मूल कारण पीड़ा या शोक सुख उत्पन्न करता है। बिना शोक के उदात्त का उद्भव नहीं हो सकता। उनके अनुसार वियोर्ग एक सामाजिक गुण है।[५] कभी-कभी अस्पष्टता, दुर्बोधता या जटिलता से भी उदात्त की सृष्टि होती है।

मानव रूप का प्रथम अंश शारीरिक आकारगत वियोर्ग है। महादेवी मानव शरीर का स्थूल चित्र पूर्णतः अंकित नहीं करती। उनसे वर्णित तन मोम है।

मोम-सा तन-दीप-सा मन।

उनसे चित्रित काया उनके भावों के अनुरूप मात्र ही हो सकती है-

छाया-सी काया वीतराग।

इतना ही नहीं, उनसे वर्णित तन चपल पारद की तरह विकल है। इन वर्णनों में तन के स्थूल रूप के वियोर्ग के स्थान पर भावतीव्रता से उत्पन्न तन का वायवीय सूक्ष्म एवं रमणीय रूप आँखों के सामने अवतरित होता है। इसको रेखाओं में अवश्य बांधा नहीं जा सका, पर इस तन के विकृत रूप के वियोर्ग का अनुभव अंतर की गहराइयों से किया जा सकता है।

चितवन की अनेक भाव, भंगिमाएं है। मनोदशा के अनुरूप चितवन परिवर्तित होती रहती है। कभी चितवन अश्रुमती हंसती होती है, तो कभी स्निग्ध। कभी चपल, कभी मीठी। कभी लोचन होते है, तो कभी व्यथासिक्त। कभी तरल, तो कभी चपल।

१अश्रुमती हंसती चितवन। २सजल लोचन तरल चितवन। ३स्निग्ध चितवन।

४चपल चितवन। ५ व्यथा सिक्त चितवन। ६सस्मित चितवन। ७सजल आखे।

८सकरूण चितवन। ९मीठी चितवन।

चितवन में इन्द्रधनुषी रंगों की कल्पना भी गई है -

जो दृग में हीरक जल भरते
जो चितवन इन्द्र धनुष करते।[६]
.....
इन्द्रधनुष मूकुटि भंग।

नयनों की दृष्टि में अनेक प्रकार की मनोस्थितियां व्यंजित होता हैं। महादेवी के गीतों में सजल, तरल, स्निग्ध एवं आर्द्र चितवन का सुन्दर अंकन हुआ है। कवयित्री स्वभाव से उत्पन्न ही सात्विक है। अतः वर्णित दृष्टि में उज्जवलता है।

कभी-कभी ऐसे क्षण भी उनके अनुभव में हैं, जब वे बसंत और पतझर दोनों को एक साथ नयनों में देखने लगती हैं।

चितवन करती पतक्षर हरा।

महादेवी को उनीदी आँखें अत्यन्त प्रिय है। उनकी दृष्टि में आंखों की अलसता अत्यन्त ही सुन्दर एवं मनोरम है। इसीलिए उनके गीतों में अलसाए नयानों का वियोर्ग प्रचुर मात्रा में वर्णित है।

सो जाओ अलसाई है, सुकुमार तुम्हारी पलकें।[७]

इस तरह महादेवी के गीतों में ऐसे अनेक प्रयोग लभ्य हैं, जिनमें उन्होनें निदियारी आंखें की आकर्षक छवि का अंकन किया है।

आलोक-तिमिर सित-असित चोर,
रवि राशि तेरे अवतंस लोल,
सीमंत जटित तारक अमोल,
चपला विभ्रम स्मित इन्द्र धनुष,
हिमकण बन झरते स्वेद निकर।
अप्सरि तेरा नर्तन सुन्दर।[८]

महादेवी की वियोगानुभूति रहस्यात्मक है और उस वियोगानुभूति का आधार प्रकृति है। विराट प्रकृति के अद्‌भूत रूप-वियोग में वे उस दिव्य सता का अन्वेषण करती है। अतः उनके गीत प्राकृतिक वियोग के चित्रों से पूर्ण है। उसे विश्वात्मा की छाया या प्रतिबिम्ब के रूप में स्वीकार करते है।[९] महादेवी छायावाद को तत्वत प्रकृति के बीच में जीवन का उद्‌गीथ मानती है।[१०] वे इस सन्दर्भ में लिखती है कि ''छायावाद का कवि न प्रकृति के किसी रूप को लघु या निरपेक्ष मानता है, न अपने जीवन को, क्योंकि वे दोनों ही एक विराट रूप समष्टि में स्थिति रखते हैं और एक व्यापक जीवन से स्पन्दन पाते है। जीवन के रूप-दर्शन के लिए प्रकृति अपना अक्षय वियोर्ग-कोष खोल देती है और प्रकृति के प्राण-परिचय के लिए जीवन अपना रंगमय भावाकाश दे डालता है।''[११]

कलाकार की वियोर्ग-चेतना के मूल आधार प्रकृति और नारी है। वे हर वस्तु में सामंजस्य को देखती है। वे सामंजस्य को वियोर्ग का अनिवार्य तत्व मानती है। उनके अनुसार ''प्रत्येक वियोर्ग या प्रत्येक सामंजस्य की अनुभूति रहस्यानुभूति है। यदि एक वियोर्ग अंश या सामंजस्य खण्ड हमारे सामने किसी व्यापक वियोर्ग अखण्ड सामंजस्य का द्वार नहीं खोल देता, तो हमारे अन्तर्गत का उल्लास से आन्दोलित हो उठना सम्भव नहीं।''[१२] इतना ही नहीं, ''प्रत्येक वियोर्ग-खण्ड अखण्ड वियोर्ग से जुड़ा है और इस तरह हमारे हद्‌यगत वियोर्गबोध से जुड़ा है।''[१३]

कवयित्री प्रकृति की अद्‌भुत सुषमा में स्वयं को खो बैठती है। वे उस विपुल प्राकृतिक नैसर्गिक वियोर्ग में दिव्य रहस्यमय सता का अन्वेषण करती है। उन्हें प्रकृति के दर्शन किसी रूपातीत की सूक्ष्म अभिव्यक्ति के रूप में हुए है। प्रकृति का मूर्तिमान वस्तुगत वियोर्ग दिव्य विराट वियोर्ग का ही अंश है। प्राकृतिक सुषमा में दिव्य सता की ही झांकी है।

प्राकृतिक वर्णनों में वियोर्ग के जिन तत्वों पर महादेवी ने बल दिया है, उनमें वर्ण-वैभव, उज्जवलता, दीप्ति और कोमलता, मादकता और उन्मतता, नवीनता तथा सुख-स्पर्श प्रमुख है। वियोर्ग के इन तत्वों का विशदीकरण महादेवी के वियोर्गबोध पर प्रकाश डालता है।

वियोर्ग-सजग कलाकार नाना प्रकार के उज्जवल वर्णो के प्रति सहज ही आकृष्ट होता है। महादेवी के गीतों में वर्ण-वियोर्ग के उदाहरण पर्याप्य मात्रा में मिलते है। विविध रंगों का वैभव अपनी सम्पूर्ण सुषमा के साथ व्यंजित हुआ है। मेघ का यह वर्णवैविध्य दर्शनीय है।

'सीपी-से, नीलम-से द्युतिमय,
कुछ पीत अरूण कुछ सित श्यामल,
कुछ सुख-चंचल, कुछ दुख-मंथर,
फैले तम से कुछ तूल विरल
मंडराते शत-शत अलि बादल।[१४]

महादेवी ने इन्द्रधनुष के रंगों की कल्पना की है। नील, पीत, अरूण, स्वर्ण, हरित, श्याम तथा धवल वर्णो का विन्यास उनके गीतों में प्राप्त होता है।

अरूणा के आरक्त कपोल।
जिसकी चाह तुम्हें है उसने
छिड़की मुझ पर लाल घोल।[१५]

दिव्य परम तत्व के अलोकिक वियोर्ग में उज्ज्वलता का होना अनिवार्य है। प्रकृति के हर अंश में उज्जवल तत्व के दर्शन होते हैं। वास्तम में उज्ज्वलता ही वियोर्ग का एक ऐसा तत्व है, जिससे दर्शक उस ओर बरबस आकृष्ट हो जाता है। निम्नलिखित उदाहरण इसके प्रमाण है।

विधु की चांदी की थाली
मादक मकरंद भरी सी।
जिसमें उजियारी रातें
लुटती घुलती मिसरी सी।[१६]

(चन्द्रमा का रजत थाल मादक मकरंद से पूर्ण है और उसमें उज्ज्वलता से परिपूर्ण रातें मिसरी सी मधुर हैं।)

प्राकृतिक वियोर्ग में सुकुमार कोमल तत्व है और साथ ही कान्तिमय दीप्ति भी है। वास्तम में कलाकार का हद्‌य एवं मृदु कोमल होता है। वियोर्ग के तत्वदर्शी कलाकार प्राकृतिक वियोर्ग में निहित मृदुता एवं कान्तिमता को वाणी में बांध रखने की उत्कट अभिलाषा रखता है। महादेवी के प्राकृतिक वर्णनों में वियोर्ग का यह तत्व निहित है। उनसे वर्णित कोमल-प्राण पुष्पों की वियोर्ग-छटा निराली है-

हिम बिन्दु नचाती तरल प्राण,
धो स्वर्ण प्राप्त में तिमिर गात,
दुहराते अलि निशि मूक तान।[१७]

सुन्दर वस्तु आकर्षणीय ही नहीं होती, उससे मन मस्त भी होता है। एक विस्मृति की खुमारी छा जाती है। उन्होनें वियोर्ग की मादकता से भरे हुए प्राकृतिक जगत का चित्रण किया ळें

हंस देता जब प्रात सुनहरे,
अंचल में बिखरा रोली।
लहरों की बिछलन पर जब
मचली पड़ती किरणें भोली।

तब कलियां चुपचाप उठाकर पल्लवों के घूंघट सुकूमार,
छलकी पलकों से कहती है कितना मादक है संसार।[१८]

जब राकेश निशा की अलकें खोलकर चांदनी में धो देता है, तब मधुमास कली से मधु मदिरा का मोल जानना चाहता है। नशीली प्रकृति का कितना मनोहर दृश्य है।

निशा को धो देता राकेश
चांदनी में जब अलकें खोल,
कली से कहता था मधुमास
बता दो मधु मदिरा का मोल।[१९]

सुषमा सम्रागी प्रकृति के मनोहर रूप-लावण्य के दर्शन से कलाकार सुधबुध खो बैठते है। रूप, रस युक्त मादक प्राकृतिक जगत अपने मन्त्र-दण्ड को फेरकर वियोर्ग-लोक में पहुंचा देता है। वियोर्ग-लोक की कुंजी मादकता ही है।

बुदबुद की लड़ियों में गूंथा
फैला श्यामल केश-कलाप
सेतु बांधती हो सरिता
सुनसुन चकवी का मूल विलाप।[२०]

वियोर्ग के तत्वों में नवीनता का प्रमुख स्थान है। क्षण-क्षण में नवीनता के लक्षणों से शोभित होने वाला रूप ही लावण्य से युक्त होकर वियोर्ग का चरम रूप हो सकता है।[२१] महादेवी के प्राकृतिक वियोर्ग-वर्णनों में नवीनता का तत्व भी परिलक्षित होता है। प्रकृति-बाला स्वयं नित्य नूतन है। उसका परिवर्तित

हर एक नूतन रूप नित्य आकर्षक एवं मोहक है। महादेवी लिखती है–

धरा कह जड़ता उर्वर बन,
प्रकट करती अपार जीवन,
उसीमें मिलते वे द्रुततर
सीचने क्या नवीन अंकुर ?[२२]

सुन्दर वस्तु की ओर आकृष्ट होना जितना सहज है, उसको स्पर्श से अनुभव करने की लालसा उतनी ही स्वाभाविक है। वह चाहता है कि कम से कम उसकी स्पर्श से सुखानुभूति प्राप्त करना चाहता है। वह चाहता है कि कम से कम उसकी छाया को छू सके। महादेवी उसी सुखस्पर्श के लिए विकलता का अनुभव करती है–

वे तारक–बालाओं की,
अपलक चितवन बन आते,
जिस में उनकी छाया भी,
मैं छू न सकूं अकुलाऊँ।[२३]

निष्कर्ष

इस प्रकार महादेवी के गीतों में वियोर्ग के तत्व, वर्ण वैभव, उज्ज्वलता, दीप्ति और कोमलता निहित है। इन तत्वों के अतिरिक्त महादेवी के गीतों में प्रकृति के विभिन्न रूपों का अंकन भी हुआ है। वियोर्ग की सर्जना का मूल स्त्रोत प्रकृति है। प्राकृतिक वियोर्ग के आकर्षित एवं अभिभूत होने पर ही कवि के कंठ से गीत निसृत होते है। महादेवी भी इसका अपवाद नहीं है। उनके लिए प्रकृति रूपसी एवं भावनामय है। इन सबसे पृथक् विवरण से महादेवी की वियोर्ग–चेतना की सजगता परिलक्षित होती है।

सन्दर्भ

१. महादेवी वर्मा के काव्य में वियोग भावना पृ० १०२
२. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० १११
३. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० १२२
४. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० १४७
५. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० १६८
६. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० १८८
७. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० १८७
८. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० ६६
९. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० ७६
१०. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० १५५
११. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० १४४
१२. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० १६१
१३. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० ५६
१४. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० ७६
१५. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० २३४
१६. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० २३१
१७. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० १६६
१८. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० ६८
१९. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० ६१
२०. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० ७७
२१. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० ६६
२२. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० १६७
२३. महादेवी वर्मा का काव्य पृ० ६८